7 प्रत्यय

जो वर्ण या समूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नये अर्थ की प्रतीति कराते हैं तथा शब्द की विश्वसनीयता में वृद्धि करते हैं, उसे प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के हैं– कृदन्त प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय।

1. **कृदन्त प्रत्यय** — जो प्रत्यय क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होकर नये शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं और उनके मेल से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

2. **तद्धित प्रत्यय** — संज्ञा और विशेषण के अन्त में लगनेवाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं और बने हुए शब्दों को 'तद्धितान्त' कहते हैं।

नोट – पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्यय नीचे दिये जा रहे हैं।

कृदन्त प्रत्यय

(1) क्तिन् प्रत्यय — ''स्त्रियाँ क्तिन।''

अर्थात् भाव आदि वाच्य होने पर धातु से क्तिन् प्रत्यय जोड़ा जाता है। 'क्तिन्' के क् और न् का लोप होकर केवल ति शेष रहता है। यह प्रत्यय सदैव भाववाचक व इससे बना हुआ शब्द स्त्रीलिंग होता है।

यथा—

कृ	+	क्तिन् (ति)	=	कृतिः	धृ	+	क्तिन् (ति)	=	धृतिः
नी	+	क्तिन् (ति)	=	नीतिः	भू	+	क्तिन् (ति)	=	भूतिः
गम्	+	क्तिन् (ति)	=	गतिः	नम्	+	क्तिन् (ति)	=	नतिः

(2) क्त्वा प्रत्यय– प्रत्यय एक क्रिया के हो चुकने पर जब दूसरी क्रिया आरम्भ हो तो पहले समाप्त हुई क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। ऐसी स्थिति में दोनों क्रियाओं का कर्त्ता एक ही होना चाहिए। सोकर, पीकर, पढ़कर, जाकर आदि पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ का बोध कराने के लिए धातु में क्त्वा प्रत्यय जोड़ा जाता है। 'करके' या 'कर' अर्थ के लिए संस्कृत में 'क्त्वा' प्रत्यय का ही प्रयोग होता है। क्त्वा प्रत्यय में क् का लोप होकर 'त्वा' शेष रहता है। क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द अव्यय हो जाता है जिसके रूप नहीं चलते हैं।

यथा—

पठ्	+	क्त्वा	=	पठित्वा	पा	+	क्त्वा	=	पीत्वा
लभ्	+	क्त्वा	=	लब्धवा	दा	+	क्त्वा	=	दात्त्वा
भू	+	क्त्वा	=	भूत्वा	दृश	+	क्त्वा	=	दृष्ट्वा
नी	+	क्त्वा	=	नीत्वा	कथ्	+	क्त्वा	=	कथित्वा
त्यज्	+	क्त्वा	=	त्यक्त्वा					

(3) ल्यप् प्रत्यय– ल्यप् का 'य' शेष रहता है। यह भी पूर्वकालिक प्रत्यय है। यदि पूर्वकालिक क्रिया की धातु से पूर्व कोई उपसर्ग या उपसर्ग स्थानीय पद हो तो वहाँ ल्यप् प्रत्यय होता है। यथा —

प्र	+	आप्	+ ल्यप् (य)	=	प्राप्य	आ	+	गम्	+	ल्यप् (य)	=	आगम्य
आ	+	दा	+ ल्यप् (य)	=	आदाय	वि	+	स्मृ	+	ल्यप् (य)	=	विस्मृत्य
उप	+	गम्	+ ल्यप् (य)	=	उपगम्य	प्र	+	नम्	+	ल्यप् (य)	=	प्रणम्य
वि	+	हा	+ ल्यप् (य)	=	विहाय	अव्	+	तृ	+	ल्यप् (य)	=	अवतीर्य
नि	+	पा	+ ल्यप् (य)	=	निपीय							

(4) शतृ - शानच् प्रत्यय– 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' अर्थात् अ प्रथमान्त (प्रथमा विभक्ति से भिन्न) के साथ समानाधिकरण होने पर लट् के स्थान पर शतृ और शानच् प्रत्यय आते हैं। शतृ और शानच् प्रत्यय वर्तमान काल एवं भविष्यत् काल की क्रियाओं के साथ प्रयोग किए जाते हैं। शतृ का अत् तथा शानच् का आन शेष रहता है।

शतृ प्रत्यय के प्रयोग से सार्वधातुक लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिंङ्) में विकार उत्पन्न हो जाता है। शतृ प्रत्ययान्त रूप बनाने के लिए सरल तरीका है। परस्मैपदी धातु से लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन रूप में से ति निकाल देने पर प्रथमा विभक्ति एक वचन पुंल्लिङ्ग का रूप बन जाता है। जैसे गच्छन्ति-ति=गच्छन्। पठन्ति-ति = पठन्। पिबन्ति - ति = पिबन्। जिनका अर्थ होता है जाता हुआ, पढ़ता हुआ, पीता हुआ। शतृ प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुंल्लिङ्ग में गच्छत् के समान गच्छन्, गच्छन्तौ, गच्छन्तः आदि, स्त्रीलिङ्ग में 'नदी' के समान गच्छन्ती, गच्छन्त्यौ, गच्छन्त्यः आदि तथा नपुंसकलिङ्ग में 'जगत्' के समान गच्छत्, गच्छती, गच्छन्ति आदि रूप चलते हैं।

शानच् प्रत्यय का 'आन' शेष रहता है। इसको भी संक्षेप में इस प्रकार बनाया जा सकता है। आत्मनेपदी लट् लकार प्रथम पुरुष के रूप सेवते या सेवन्ते में से 'तो' या 'न्ते' निकालकर 'आन' जोड़ देते हैं। उसमें मुक् के आगम के साथ 'मान' हो जाता है। तब नियमानुसार मान या आन जोड़ देने से शानच् प्रत्ययान्त रूप बन जाता है। यथा— सेवते-ते = सेव + मान = सेवमान। ददते - ते = दद + आन = ददान।

इस तरह शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुंल्लिङ्ग में राम के समान सेवमानः सेवमानौ सेवमानाः आदि, स्त्रीलिङ्ग में 'रमा' के समान-सेवमाना, सेवमाने, सेवमानाः आदि तथा नपुंसकलिङ्ग में फल के समान-सेवमानम्, सेवमाने, सेवमानानि रूप बनते हैं।

शतृ प्रत्ययान्त रूप

				पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
कथ्	+	शतृ	=	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्
हस्	+	शतृ	=	हसन्	हसन्ती	हसत्
अस्	+	शतृ	=	सन्	सती	सत्
खाद्	+	शतृ	=	खादन्	खादन्ती	खादत्
चल्	+	शतृ	=	चलन्	चलन्ती	चलत्
ज्ञा	+	शतृ	=	जानन्	जानन्ती	जानत्
पठ्	+	शतृ	=	पठन्	पठन्ती	पठत्
दृश्	+	शतृ	=	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यात्
गम्	+	शतृ	=	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
भू	+	शतृ	=	भवन्	भवन्ती	भवत्

शानच् प्रत्ययान्त रूप

				पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
भाष्	+	शानच्	=	भाषमानः	भाषमाना	भाषमानम्
एध्	+	शानच्	=	एधमानः	एधमाना	एधमानम्
कृ	+	शानच्	=	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुवाणम्
यज्	+	शानच्	=	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
लभ्	+	शानच्	=	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
याच्	+	शानच्	=	याचमानः	याचमाना	याचमानम्
नी	+	शानच्	=	नयमानः	नयमाना	नयमानम्
वृध्	+	शानच्	=	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्दमानम्
कथ्	+	शानच्	=	कथयमाण	कथयमाणा	कथयमाणम्

(5) तुमुन् प्रत्यय– 'तुमुन्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' अर्थात् क्रियार्थक क्रिया उपपद रहते भविष्यत् अर्थ में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग होता है। तुमुन् प्रत्यय में 'तुम्' शेष रहता है। इसका प्रयोग हेतु वाचक शब्दों में 'के लिए' 'का' 'के' अर्थ में किया जाता है। यह अव्यय होता है और इसके रूप नहीं चलते हैं। यह तुमुन् प्रत्ययान्त रूप चतुर्थी विभक्ति का विकल्प रूप है।

पठ्	+	तुमुन्	=	पठितुम्
दृश्	+	तुमुन्	=	द्रष्टुम्
स्था	+	तुमुन्	=	स्थातुम्
श्रु	+	तुमुन्	=	श्रोतुम्
ज्ञा	+	तुमुन्	=	ज्ञातुम्

कृ	+	तुमुन्	=	कर्तुम्
भू	+	तुमुन्	=	भवितुम्
गम्	+	तुमुन्	=	गन्तुम्
हन्	+	तुमुन्	=	हन्तुम्
छिद्	+	तुमुन्	=	छेन्तुम्
गै	+	तुमुन्	=	गातुम्
कथ्	+	तुमुन्	=	कथयितुम्
पा	+	तुमुन्	=	पातुम्

(6) यत् प्रत्यय–'अचो यत्' अर्थात् 'चाहिए' अर्थ को बतानेवाले यत् प्रत्यय में 'य' शेष रहता है और धातु के स्वर को गुण हो जाता है। यथा—

				पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
पा	+	यत्	=	पेयः	पेया	पेयम्
नी	+	यत्	=	नेयः	नेया	नेयम्
श्रु	+	यत्	=	श्रव्यः	श्रव्या	श्रव्यम्
भू	+	यत्	=	भव्यः	भव्या	भव्यम्
चि	+	यत्	=	चेयः	चेया	चेयम्
लभ्	+	यत्	=	लभ्यः	लभ्या	लभ्यम्
शकु	+	यत्	=	शक्यः	शक्या	शक्यम्
हन्	+	यत्	=	वध्यः	वध्या	वध्यम्

➨ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **'पीत्वा' में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय को लिखिए–**
   (क) पा + त्वा (ख) पि + क्त्वा (ग) पा + क्त्वा (घ) पी + त्वा
   उत्तर – (ग) पा + क्त्वा।
2. **'नी' धातु में 'यत्' प्रत्यय का योग करने पर होता है–**
   (क) नीय (ख) नाय्य (ग) नेय (घ) नेय्य
   उत्तर–(ग) नेय।
3. **'शायितुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय लिखिए–**
   (क) शा + तुमुन् (ख) शी + तुमुन् (ग) शि + तुमुन् (घ) शे + तुमुन्
   उत्तर – (क) शा + तुमुन्।
4. **'प्रच्छ्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय का योग करने पर होता है–**
   (क) प्रछ्वा (ख) पृष्टवा (ग) प्रष्ट्वा (घ) प्रिछ्ट्वा
   उत्तर – (ग) प्रष्ट्वा।
5. **'नेतुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय लिखिए–**
   (क) ने + तुमुन् (ख) नी + तुमुन् (ग) नै + तुमुन् (घ) नय् + तुमुन्
   उत्तर – (ख) नी + तुमुन्।
6. **'ग्रह' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय का योग करने पर होता है–**
   (क) ग्रहीत्वा (ख) गृहीत्वा (ग) गहीत्वा (घ) ग्राहित्वा
   उत्तर – (ख) गृहीत्वा।
7. **'दा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय का योग करने पर होता है–**
   (क) दात्वा (ख) दयित्वा (ग) दत्वा (घ) दायित्वा
   उत्तर – (ग) दत्वा।

8. **'द्रष्टुम्' में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय लिखिए–**
(क) द्रश + तुमुन् (ख) दृश् + तुमुन् (ग) उष् + तुमुन् (घ) दृष् + तुमुन्
उत्तर –(ख) दृश् + तुमुन्।

9. **'पातुम्' में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय लिखिए–**
(क) पिब् + तुमुन् (ख) पिब् + क्त्वा (ग) पा + तुमुन् (घ) पा + क्त
उत्तर – (ग) पा + तुमुन्।

10. **'पठ्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय का योग करने पर होता है–**
(क) पठत्वा (ख) पठित्वा (ग) पठितः (घ) पठितुम्
उत्तर–(ख) पठित्वा।

11. **'सेव्' धातु में 'शानच्' प्रत्यय लगाने पर बनता है–**
(क) सेवमानः (ख) सेवामानः (ग) सेवशानः (घ) सहमानः
उत्तर – (क) सेवमानः।

12. **'त्यक्त्वा' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है–**
(क) त्यज् + क्त (ख) त्यज् + क्त्वा (ग) त्यज् + तुमुन् (घ) त्यज् + ल्यप्
उत्तर – (ख) त्यज् + क्त्वा।

13. **'दा' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय का योग करने पर होता है–**
(क) देतम् (ख) दानम् (ग) दातुम् (घ) देयम्
उत्तर – (ग) दातुम्।

14. **'याचितुम्' पद का प्रकृति प्रत्यय है–**
(क) याच् + तुमुन् (ख) याच् + ल्यप् (ग) याच् + शानच् (घ) याच् + क्तिन्
उत्तर – (क) याच् + तुमुन्।

15. **'भू' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर रूप बनता है–**
(क) भूत्वा (ख) भूक्त्वा (ग) भवित्वा (घ) भावित्वा
उत्तर – (क) भूत्वा।

16. **'पठित्वा' शब्द में प्रयुक्त प्रकृत (धातु) एवं प्रत्यय लिखिए–**
(क) पठ् + त्वां (ख) पठ् + क्तं (ग) पठ् + क्त्वा (घ) पठ् + तुमुन्
उत्तर – (ग) पठ् + क्त्वा।

17. **'गम्' धातु में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग करने पर क्या रूप होता है?**
(क) गमितुम (ख) गन्तुम् (ग) गच्छितुम (घ) इनमें से कुछ भी नहीं
उत्तर – (ख) गन्तुम्।

18. **'अनु + स्त + ल्यप्' का उचित कृदन्त रूप है–**
(क) अनुसर्य (ख) अनुस्तत (ग) अनुस्तय (घ) अनुसृज्य
उत्तर – (ख) अनुस्तत।

19. **'गृहीत्वा' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय हैं–**
(क) गह् + त्वा (ख) ग्रह् + क्त्वा (ग) गही + त्वा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) ग्रह् + क्त्वा।

20. **'दृश् ' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय करने पर योग बनता है–**
(क) दर्शितुम् (ख) पश्यतुम् (ग) द्रष्टुम् (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर –(ग) द्रष्टुम्।

21. **'भवन' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय लिखिए।**
(क) भव् + इन् (ख) भू + तिप् (ग) भू + शतृ (घ) भू + तुम्
उत्तर – (ग) भू + शतृ।

22. 'छिद्र' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(क) छिन्तः (ख) छिन्नः (ग) छेन्ता (घ) कोई नहीं
उत्तर – (क) छिन्तः।

23. पठ् धातु में तुमुन् प्रत्यय लगाने पर रूप होगा–
(क) पठयितुम् (ख) पठित्वा (ग) पठितुम् (घ) सभी अशुद्ध
उत्तर – (ग) पठितुम्।

24. भवितुम् पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(क) भू + क्त्वा (ख) भू + शतृ (ग) भू + तुमुन् (घ) भू + शानच्
उत्तर – (ग) भू + तुमुन्।

25. 'गति' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय लिखिए।
(क) गम् + क्त (ख) गम् + तुमुन् (ग) गम् + ङीष (घ) गम् + क्तिन्
उत्तर – (घ) गम् + क्तिन्।

26. 'दृश्' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय का योग करने पर बनता है–
(क) दर्शितुम् (ख) पश्यतुम् (ग) द्रष्टुम् (घ) दृष्टम्
उत्तर – (ग) द्रष्टुम्।

27. 'नेतुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है–
(क) ने + तुमुन् (ख) नी + तुमुन् (ग) नै + तुमुन् (घ) नय् + तुमुन
उत्तर – (ख) नी + तुमुन्।

28. 'स्था' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर बनता है–
(क) स्थाक्त्वा (ख) स्थित्वा (ग) तिष्ठित्वा (घ) स्थात्वा
उत्तर – (ख) स्थित्वा।

29. 'दृष्टिः' पद में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है–
(क) दृश् + क्तिन् (ख) दृष् + टि (ग) दृश् + ति (घ) दृष् + क्तिन्
उत्तर – (क) दृश् + क्तिन्।

30. 'गन्तुम्' पद में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) गम् + तुमुन् (ख) गन् + तुम् (ग) गम् + तुम् (घ) गन् + तुमुन्
उत्तर – (क) गम् + तुमुन्।

31. 'पा' धातु में 'शतृ' प्रत्यय का योग करने पर बनता है–
(क) पातुम् (ख) पीत्वा (ग) पिबन् (घ) पीतम्
उत्तर – (ग) पिबन्।

32. 'पठितुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) पठ् + त्वा (ख) पठ् + क्त (ग) पठ् + तुमुन् (घ) पठ् + ल्यप्
उत्तर – (ग) पठ् + तुमुन्।

33. 'गच्छन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) गम् + शतृ (ख) गच्छ + शानच् (ग) गच्छ् + शतृ (घ) गम् + क्त्वा
उत्तर – (क) गम् + शतृ।

34. 'भू' धातु में 'तुमुन्' 'प्रत्यय' करने पर रूप होता है–
(क) भूतम् (ख) भवतुम् (ग) भवितुम् (घ) भवन
उत्तर – (ग) भवितुम्।

35. 'कृ + शतृ' का उचित कृदन्त रूप है–
(क) कर्ता (ख) कुर्वन् (ग) कर्तृ (घ) कृतम्
उत्तर – (ख) कुर्वन्।

36. 'पठन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय है–
(क) पठ् + क्त्वा (ख) पठ् + शतृ (ग) पठ् + तुमुन् (घ) पठ् + ल्यप्
उत्तर – (ख) पठ् + शतृ।

37. 'लभ्' धातु में क्त्वा प्रत्यय का रूप होगा–
(क) लभित्वा (ख) लब्ध्वा (ग) लाभित्वा (घ) इनमें से कोई भी नहीं
उत्तर – (ख) लब्ध्वा।

38. 'पा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर क्या रूप बनेगा?
(क) पीतम् (ख) पीतः (ग) पीत्वा (घ) पातुम्
उत्तर – (ग) पीत्वा।

39. 'भू' धातु में तुमुन् प्रत्यय करने पर रूप होता है–
(क) भूतम् (ख) भवतुम (ग) भवितुम्
उत्तर – (ग) भवितुम्।

40. 'ददत्' पद में प्रयुक्त प्रकृति और प्रत्यय हैं–
(क) दा + शतृ (ख) दा + तव्यत् (ग) दा + अनीयर् (घ) दा + क्त्वा
उत्तर– (क) दा + शतृ।

41. 'गम्' धातु में शतृ प्रत्यय लगने पर रूप होगा–
(क) गन्तुम् (ख) गमयितुम् (ग) गच्छन् (घ) गमितः
उत्तर– (ग) गच्छन्।

42. 'भुज्' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा–
(क) भुक्त्वा (ख) भुक्तवान् (ग) भुक्तम् (घ) भोक्ता
उत्तर– (ग) भुक्तम्।

43. 'लब्धुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) लभ् + क्त (ख) लभ् + क्त्वा (ग) लभ् + तुमुन् (घ) लभ् + क्तवतु
उत्तर– (ग) लभ् + तुमुन्।

44. 'गच्छन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है–
(क) गम् + शतृ (ख) गम् + शानच् (ग) गम् + तुमुन् (घ) गम् + ण्वुल्
उत्तर– (क) गम् + शतृ।

45. 'धा' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय करने पर रूप होता है–
(क) धात्वा (ख) हित्वा (ग) धूत्वा (घ) धौत्वा
उत्तर– (क) धात्वा।

46. 'हस्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर रूप होता है–
(क) हसितवान् (ख) हसितुम् (ग) हसितम् (घ) हसित्वा
उत्तर– (घ) हसित्वा।

47. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा–
(क) पठिता (ख) पठन् (ग) पठित (घ) पठित्वा
उत्तर– (ख) पठन्।

48. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा–
(क) पठत् (ख) पठन् (ग) पठितुम् (घ) पठितः
उत्तर– (ख) पठन्।

49. 'गायन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय हैं–
(क) गै + शतृ (ख) गै + शानच् (ग) गै + तुमुन् (घ) गै + यत्
उत्तर– (ग) गै + तुमुन्।

50. 'पातुम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) पा + क्तिन् (ख) पा + तुमुन् (ग) पा + ल्यप् (घ) पा + क्त्वा
उत्तर– (ख) पा + तुमुन्।

●●